IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी बालकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

विजय सिंह
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग,
एस0आई0एम0टी0, रूद्रपुर
उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

सतीश चन्द्र दिवाकर
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग,
एस0आई0एम0टी0, रूद्रपुर
उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

सारांश–

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो व्यक्ति मे अन्तर्निहित भावनाओं को प्रकट कर उसके स्वरूप को प्रकाशित करती हैं वस्तुतः शिक्षा के सहयोग से मानव का सर्वांगीण विकास संभव है। शोधार्थी के द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में "माध्यमिक स्तर के अध्यनरत ग्रामीण व शहरी बालकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" किया गया हैं। शोध अध्ययन को करने के लिये सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है तथा प्रतिदर्श के रूप मे माध्यमिक स्तर मे अध्यनरत 120 बालकों को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा चुना गया। आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिये प्रो० ए० के० पी० सिन्हा (रायपुर) तथा प्रो0० आर० पी० सिह (पटना) द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण "एडजस्टमेंट इन्वेन्टरी फार स्कूल स्टूडेन्टस" का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रूप मे पाया गया कि ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के बालकों का सामाजिक एवं सावेगिक समायोजन में अंतर प्राप्त हुआ लेकिन विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के बालकों में समायोजन में कोई अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

मुख्य बिन्दुः– शैक्षिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, सावेगिक समायोजन।

प्रस्तावना–

शिक्षा एक ऐसा तंत्र है, जिससे बालक जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखता रहता है, इसके द्वारा बालक न केवल अपनी शक्तियों का विकास करता है बल्कि आवश्यकता के अनुसार भौतिक सामाजिक, राजनीतिक एवं वातावरण के अनुकूल ही अपने आपको बनाता है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जो व्यक्ति मे अन्तर्निहित भावनाओं को प्रकट कर उसके स्वरूप को प्रकाशित करती हैं वस्तुतः शिक्षा के सहयोग से मानव का सर्वांगीण विकास संभव है।

गीता से अनुसार, "सा विद्या विमुक्ते"। अर्थात शिक्षा या विद्या वही है जो हमें बंधनों से मुक्त करे और हमारा हर पहलु पर विस्तार करे।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, "शिक्षा व्यक्ति में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

शिक्षा राष्ट्र का मेरुदण्ड है। जीवन के प्रारभिक वर्षो में आत्म संप्रत्यय मे अस्थिरता देखी जा सकती परंतु आयु बढने के साथ– साथ उसमें स्थिरता आती है आत्म संप्रत्यय में अस्थिरता, विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन मे दुर्बलता प्रदान करती है। व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय की शुद्धता उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन को सार्थक रुप से प्रभावित करती है। आत्म संप्रत्यय व्यक्ति के विचारों और अनुभव से परिवर्तित होते रहते है, अतः आत्म संप्रत्यय भी परिवर्तित होता रहता है। जब व्यक्ति की उपलब्धि और उसके लक्ष्य में अंतर अधिक होता है तब उसका आत्म संप्रत्यय ऋणात्मक रूप से प्रभावित

होता है। व्यक्ति जितना ही कम आक्रामक होता है, उसका आत्म संप्रत्यय उतना ही अधिक उच्च होता। परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार–सम्बन्धी प्रक्रिया को समायोजन कहते हैं। इसी प्रकार पर्यावरण की कठिनाइयों एवं बाधाओं को ध्यान में रखते हुए व्यवहार में जो परिवर्तन किये जाते हैं, उन्हें समायोजन कहते हैं।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

वर्तमान समय मे किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक व वैयक्तिक विकास मे शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षा प्रणाली प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च इन तीन स्तरो मे बॉटी गयी है। इनमे से माध्यमिक स्तर के वालको मे विभिन्न प्रकार की शैक्षिक समस्याये प्रकट होती है। जिनके से समायोजन की समस्या भी प्रमुख है, इससे सम्बधित शोधो के अध्ययन के बाद शोधार्थी को यह अनुभव हुआ कि वालको के शैक्षिक, सामाजिक व सावेगिक समायोजन पर कम शोध कार्य हुए है इसीलिए शोधार्थी ने "माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी वालको के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" विषय का चुनाव किया गया।

समस्या कथन

"माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी बालको के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"

समायोजन की सम्प्रत्यात्मक परिभाषा–

बोरिंग, लैंगफैल्ड एवं बैल्ड के अनुसार,

"समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।**"**

समायोजन की क्रियात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध अध्ययन मे समायोजन से तात्पर्य शैक्षिक, सामाजिक एवं सांवेगिक समायोजन है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

- माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालको के समायोजन का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत विज्ञान एवं कला वर्ग के बालक के समायोजन का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाए–

- माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालको के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विज्ञान एवं कला वर्ग के बालको के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन की विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या– प्रस्तुत शोध अध्ययन मे जनसंख्या के अन्तर्गत जनपद बरेली के समस्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों मे अध्ययनरत समस्त बालकों को सम्मलित किया गया है।

शोध अध्ययन का प्रतिदर्श– प्रस्तुत शोध अध्ययन मे प्रतिदर्श के अर्न्तगत शोध जनसंख्या से 10 माध्यामिक विद्यालय (5 ग्रामीण व 5 शहरी) के विद्याथियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि से किया गया है–

वर्ग	ग्रामीण बालक	शहरी बालक	योग
विज्ञान वर्ग	30	30	60
कला वर्ग	30	30	60
योग	**60**	**60**	**120**

शोध अध्ययन मे प्रयुक्त उपकरण– प्रस्तुत शोध अध्ययन मे प्रो० ए० के० पी० सिन्हा (रायपुर) तथा प्रो०० आर० पी० सिह (पटना) द्वारा निर्मित एडजस्टमेंट इन्वेन्टरी फार स्कूल स्टूडेन्टस का प्रयोग किया गया है।

फलांकन तालिका

क्रम0 स0	पदों के प्रकार	सदैव	कभी–कभी	कभी नही
1	सदैव	2	1	0
2	कभी नही	0	1	2

प्रयुक्त सांख्यिकी– शोध अध्ययन हेतु प्रदत्तों के संग्रह के पश्चात विश्लेषण के लिए सांख्यिकी प्रविधियाँ मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण अपनाई गयीं हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आंकड़ों का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया है–

तालिका–1

माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालको के समायोजन का अध्ययन

आयाम	ग्रामीण क्षेत्र के बालक		शहरी क्षेत्र के बालक		टी–परीक्षण (df=58)
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
सामाजिक समायोजन	9.30	4.19	4.35	2.43	5.62
शैक्षिक समायोजन	8.25	2.13	7.56	2.17	1.27
सांवेगिक समायोजन	7.54	4.41	2.78	1.98	5.47

सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान = 2.59, सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान = 1.97

तालिका संख्या–1 के अनुसार बरेली जिले के अंतर्गत आने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के बालकों का सामाजिक समायोजन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के बालकों का मध्यमान 9.30 तथा मानक विचलन 4.19 एवं शहरी क्षेत्र के बालकों का मध्यमान 4.35 तथा मानक विचलन 2.43 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूह के मध्य टी परीक्षण का मान 5.62 पाया गया, शैक्षिक समायोजन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के बालकों का मध्यमान 8.25 तथा मानक विचलन 2.13 एवं शहरी क्षेत्र के बालकों का मध्यमान 7.56 तथा मानक विचलन 2.17 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूह के मध्य टी परीक्षण का मान 1.27 पाया गया एवं सांवेगिक समायोजन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के बालकों का मध्यमान 7.54 तथा मानक विचलन 4.41 एवं शहरी क्षेत्र के बालकों का मध्यमान 2.78 तथा मानक विचलन 1.98 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूह के मध्य टी–परीक्षण का मान 5.47 पाया गया। जिसमे सामाजिक तथा सांवेगिक समायोजन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के बालकों तथा शहरी क्षेत्र के बालकों के मध्य प्राप्त टी–परीक्षण का मान **df=58** के सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के तालिका मान से से अधिक है अतः यहॉ पर दोनों समूहों के मध्य अन्तर सार्थक है। इसलिये शून्य परिकल्पना "**माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालको के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**" पूर्णतया अस्वीकृत होती है।

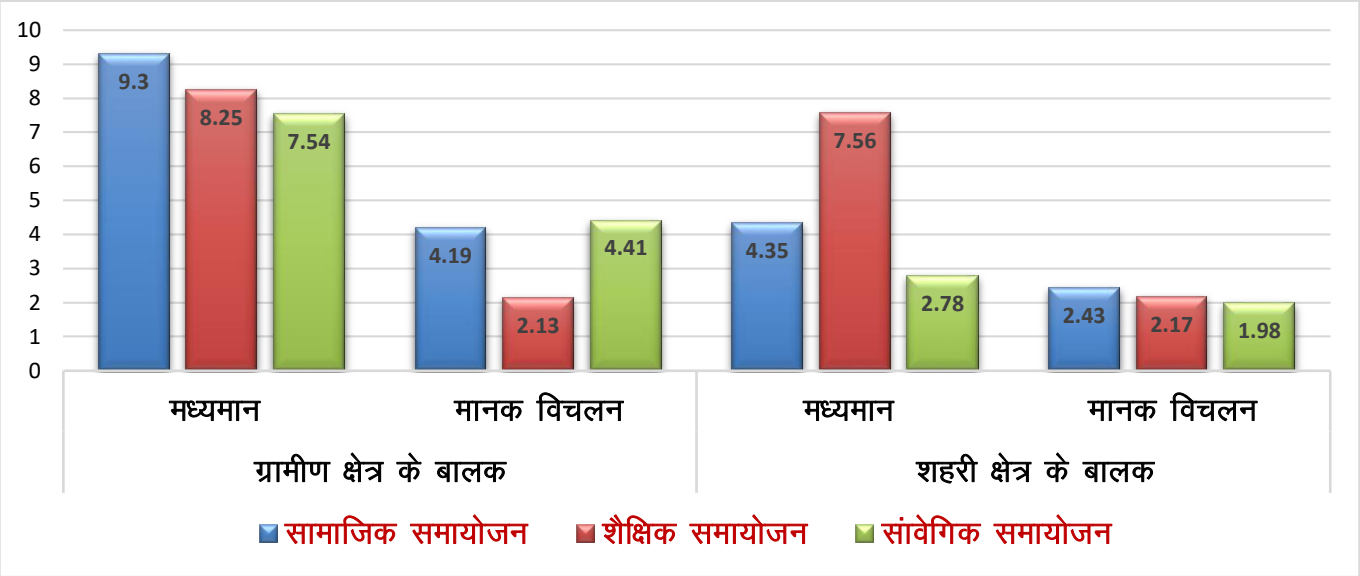

आरेख–1

तालिका–2

माध्यमिक स्तर मे अध्ययनरत विज्ञान एवं कला वर्ग के बालकों के समायोजन का अध्ययन

आयाम	विज्ञान वर्ग के बालक		कला वर्ग के बालक		टी–परीक्षण (df=58)
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
सामाजिक समायोजन	3.54	2.34	3.67	2.43	0.21
शैक्षिक समायोजन	5.63	1.57	5.73	1.76	0.23
सांवेगिक समायोजन	2.68	2.32	2.75	2.93	0.10

सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान = 2.59, सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान = 1.97

तालिका संख्या–2 के अनुसार बरेली जिले के अंतर्गत आने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के बालकों का सामाजिक समायोजन के अंतर्गत विज्ञान वर्ग के बालकों का मध्यमान 3.54 तथा मानक विचलन 2.34 एवं कला वर्ग के बालकों का मध्यमान 3.67 तथा मानक विचलन 2.43 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूह के मध्य टी परीक्षण का मान 0.21 पाया गया, शैक्षिक समायोजन के अंतर्गत विज्ञान वर्ग के बालकों का मध्यमान 5.53 तथा मानक विचलन 1.57 एवं कला वर्ग के बालकों का मध्यमान 5.73 तथा मानक विचलन 1.76 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूह के मध्य टी परीक्षण का मान 0.23 पाया गया एवं सांवेगिक समायोजन के अंतर्गत विज्ञान वर्ग के बालकों का मध्यमान 2.68 तथा मानक विचलन 2.32 एवं कला वर्ग के बालकों का मध्यमान 2.75 तथा मानक विचलन 2.93 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूह के मध्य टी–परीक्षण का मान 0.10 पाया गया। जिसमे सामाजिक तथा सांवेगिक समायोजन के अंतर्गत विज्ञान वर्ग के बालकों तथा कला वर्ग के बालकों के मध्य प्राप्त टी–परीक्षण का मान **df=58** के सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान तालिका मान से से कम है अतः यहॉ पर दोनों समूहों के मध्य अन्तर असार्थक है। इसलिये शून्य परिकल्पना **"माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विज्ञान एवं कला वर्ग के बालको के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नही है।"** पूर्णतया स्वीकृत होती है।

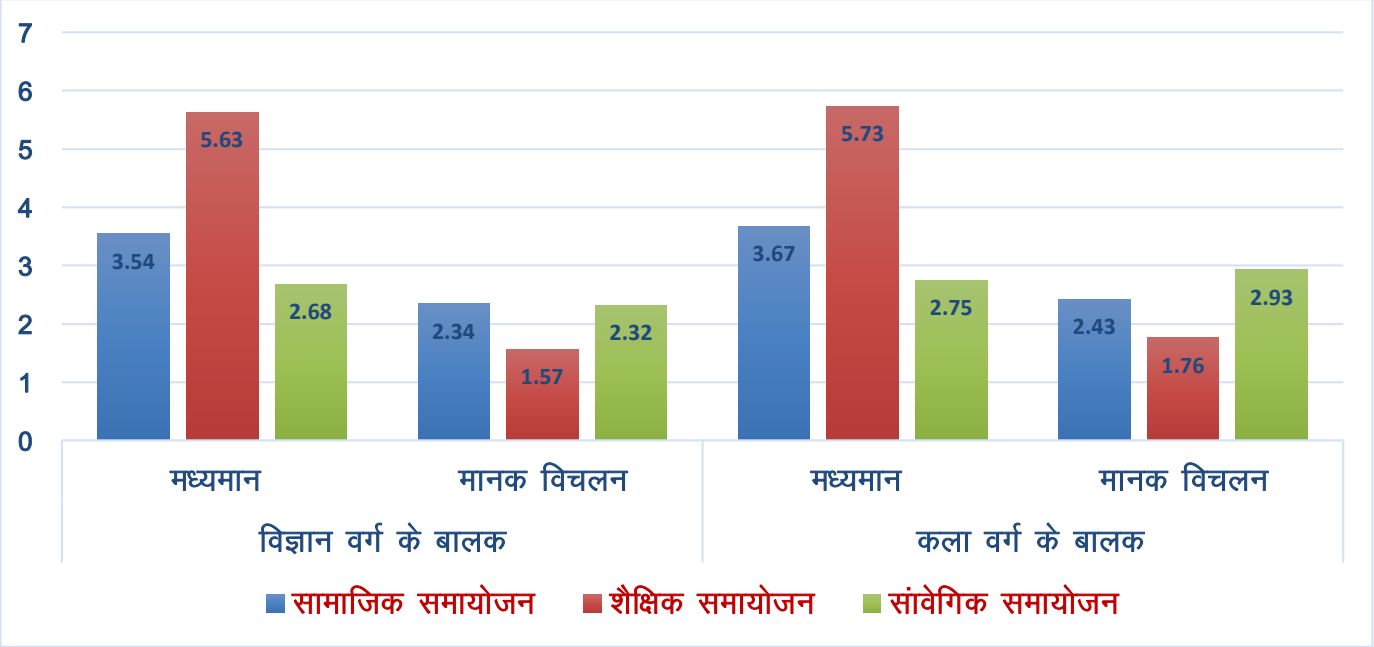

आरेख–2

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष बालकों के लिए महत्वपूर्ण रूप से अत्यंत ही लाभकारी होंगे। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष से वह परिवार, समाज व विद्यालय में अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकते हैं। इस शोध के निष्कर्ष न केवल बालकों बल्कि अध्यापकों, अभिभावकों के लिए भी महत्वपूर्ण होंगे जिसके प्रयोग से बालकों में समायोजन की समस्या को दूर किया जा सकता है ।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

- पाठक, पी0डी0 (2007) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें – इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।.
- पाठक, पी0डी0 एवं मंगल, एस0 के0 (2013) अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स.।
- आस्थाना, विपिन (2011), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- भटनागर, ए०बी० भटनागर, मिनाक्षी, अनुराग, (2003). एजुकेशनल साइकोलॉजी, आर० लाल बुक डिपो।
- गुप्ता, एस०पी०, गुप्ता, अलका (2007), साख्यिकीय विधियाँ, पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- गुड, सी०वी० (1953) इण्ट्रोड्क्शन ऑफ एजूकेशन रिसर्च, सेकेण्ड एडीशन एपलेट ऑन सेन्चुरी क्राफ्ट इन्स न्यूयार्क।
- कपिल, एच0के0 (1982) सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- माथुर, एस०एस० (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।